

डॉ. निशंक की कहानियों में मानवीय संवेदना

संपादक

डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण'



ISBN 978-93-86812-62-9

प्रकाशक : हिंदी साहित्य निकेतन

16 साहित्य विहार .

बिजनौर (उ०प्र०) 246701

फ़ोन : 01342-263232, 07838090732

ई-मेल : hindisahityaniketan@gmail.com

वेब साइट : www.hindisahityaniketan.com

टाइप सैटिंग : अनुभूति ग्राफ़िक्स, बिजनौर (उ०प्र०)

आवरण : के० रवींद्र

मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली 32

संस्करण : प्रथम 2019

मूल्य : तीन सौ रुपये

DR. NISHANK KI KHANIYON MEN MANVIYA SAMVEDNA

ED. BY DR. YOGENDRA NATH SHARMA 'ARUN'

Rs. 300

अनुक्रम

जीवन की सच्चाइयों का दर्पण : वाह जिंदगी/ डॉ० महेन्द्रनाथ राय	11
टूटते दायरे : बदलते समाज की त्रासदियों का आईना/ प्रो० हौसिलाप्रसाद सिंह	18
मेरे संकल्प में मानवीय सरोकार/ डॉ० पुष्पा खंडूरी	38
'एक और कहानी': मानवीय पीड़ा का जीवंत दस्तावेज/ डॉ० संतराम वैश्य	44
रचनात्मकता का दर्पण : मील के पत्थर/ प्रो० चंद्रकला रावत	57
समकालीन चिंतन : खड़े हुए प्रश्न/ डॉ० शेषारत्नम्	67
पहाड़ी संस्कृति का जीवंत दस्तावेज : कथाएँ पहाड़ों की/ डॉ० रमा	79
'वाह जिंदगी': आम आदमी के संघर्ष की कथाएँ/ प्रो० आनंदप्रकाश त्रिपाठी	87
उत्कट जिजीविषा की कहानियाँ : विपदा जीवित है/ लक्ष्मी पांडेय	96
बस एक ही इच्छा/ डॉ० सविता मोहन	103
संवेदना का अंतहीन धरातल/ डॉ० साधना अग्रवाल	110

वाह जिंदगी : आम आदमी के संघर्ष की कथाएँ

प्रो० आनंदप्रकाश त्रिपाठी

राजनीति और साहित्य का रिश्ता युगों पुराना है। साहित्य में राजनीतिक चेतना के समावेश की समृद्ध परंपरा को हमारे सृजनधर्मियों ने समय-समय पर रेखांकित किया है, किंतु राजनीति साहित्य को संचालित करे, यह साहित्यकारों ने कभी स्वीकार नहीं किया। नेहरू, गांधी युग से लेकर वर्तमान राजनीतिक दौर के अनेक राजनीतिज्ञों ने साहित्य-मार्ग पर चलने का प्रयास किया है। अटलबिहारी वाजपेयी से लेकर डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' और उसके आगे की राजनीतिज्ञ पीढ़ी ने साहित्य को अपनी साधना का विषय बनाया और अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं। यह भी परंपरा रही है कि रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे अनेक साहित्यकारों ने भी राजनीति में प्रवेश किया और राजनीति के प्रतिमान स्थापित किए। कथाकार प्रेमचंद ने साहित्य को राजनीति के आगे चलनेवाली मशाल कहा है। वे कहते हैं कि 'वह साहित्य देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सच्चाई है। जनसरोकारों का होना साहित्य में आवश्यक है।'

कभी रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था कि 'साहित्य राजनीति का अनुचर नहीं, स्वतंत्र है। उसे पूरा अधिकार है कि जीवन के विशाल क्षेत्र में से वह अपने कार्य के योग्य वे सभी द्रव्य उठा ले, जिन्हें राजनीति अपने काम में लाती है।' जाहिर है, साहित्य में राजनीति अभिव्यक्ति पाती है। साहित्य और राजनीति की परस्परता सर्वस्वीकृत है। सुखद आश्चर्य है कि रमेश पोखरियाल का साहित्य उनकी राजनीतिक विचारधारा से अनुप्रेरित साहित्य नहीं है। राजनीति की विकृतियों, विडंबनाओं और घृणा-विद्वेष की किंचित काली छाया उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को प्रभावित नहीं कर सकी है।